बाइबल टीचर

वर्ष 17 अगस्त 2020 अंक 9

सम्पादकीय

रखता हूं खुदा के वादों पर ईमान

हमारा परमेश्वर महान है, और उसने हमसे कुछ प्रतिज्ञाएं की है। हमें उसके वायदों पर विश्वास है। एक गीत मसीही लोग गाते है जिसके बोल है, ''रखता हूं खुदा के वायदों पर भरोसा'' मैं रखता उसके वायदों पर ईमान। पतरस ने इन वायदों या प्रतिज्ञाओं के विषय में लिखा था, "हे भाईयों परमेश्वर वे और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए। क्योंकि ईश्वरीय सामर्थ में सब कुछ जीवन और भक्ति से संबंध रखता है हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार बुलाया है जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी है: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।" (2 पतरस 1:2-4)। हम यहां देखते हैं कि परमेश्वर अपनी परियोजनाओं या वायदों को पूरा करता है। वह अपने वचन का पक्का है ओर हम उस पर निर्भर कर सकते है। परमेश्वर सच्चा है तथा विश्वास योग्य है। (1 कुरि. 1:9) परमेश्वर ने यह देखा कि मनुष्य पाप में है और अपने वायदे को पूरा करते हुए उसने अपने पुत्र यीशु को इसे संसार में भेजा।

बाइबल हमें यह भी बताती है कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता और नहीं चाहता कि कोई नाश हो बल्कि सबको मन फिराओ का अवसर मिले। (2 पतरस 3:9) परमेश्वर ने सारी प्रतिज्ञाएं पूरी की है और वह आने वाली प्रतिज्ञाओं को भी पूरा करेगा।

महान परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह मनुष्य के उद्धार के लिये अपने पुत्र को इस संसार में भेजेगा। मनुष्य जब पाप में था तब परमेश्वर ने उसके उद्धार की योजना बनाई थी। परमेश्वर बदलता नहीं (इब्रा. 13:8)। आज मनुष्य को उसमें विश्वास करने की आवश्यकता है। हम देखते हैं कि पाप मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है तथा इससे बचने के लिये परमेश्वर ने मनुष्य को समाधान दिया है। यीशु ही वो समाधान है। यदि आप उत्पत्ति 3:15 पढ़े तो वहां हमें परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा मिलती है। पाप की समस्या को दूर करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा किया

था। परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा था जिस दिन तुम इसे फल को खाओगे उस दिन मर जाओगे। (उत्पत्ति 2:17)। वे दोनों पाप में फंस गये और उन्होंने पाप करके परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा। परमेश्वर ने क्रूस पर शैतान के कार्य को तोड़ दिया है (कुरि. 5:19–21) परमेश्वर ने अपने वायदें को पूरा किया। उसने हमें एक सुसमाचार दिया जिसके द्वारा हम पापों से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। वो सुसमाचार यह है कि यीशु हमारे पापों के लिये मारा गया, गाड़ा गया और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। (1 कुरि. 15:1–4)।

क्या आप परमेश्वर के वायदों पर विश्वास करते हैं? उसने प्रतिज्ञा कि है कि वह हमारा पिता होगा। वह हमारा आत्मिक पिता है। हम उसके द्वारा उसके आत्मिक परिवार अर्थात मसीह की कलीसिया में है जिसमें परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की है कि वह हमारा पिता होगा यदि हम पूरे मन से उसे खोजते हैं। (इब्रा. 11:6) जो उससे प्रेम करते हैं उनके लिये सब बातें भलाई को उत्पन्न करती हैं। (रोम 8:21–28)। आपको इस बात से प्रसन्न होना चाहिए कि आप परमेश्वर को अपना पिता कह सकते है तथा जो वायदा उसने आपसे किया है उसे वह पूरा करेगा। (रोमियों 8:16–17; गलतियों 3:26–29)।

एक और विशेष बात यह है कि परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है। सारी आत्मिक आशीषें हमें प्रभु यीशु में मिलती है। (इफि. 152–3) जब इस्राएल जो कि परमेश्वर की प्रजा थी जंगल में भूखे प्यासे घूम रहे थे तब परमेश्वर ने उनके लिये आसमान से मन्ना बरसाया और वह खाकर तृप्त हुए। जो परमेश्वर हमारी रक्षा करता है वह हमारी आवश्यकताओं को भी पूरा करता है। भजन 37:25 में लिखा है, ''मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता हूं, परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है। बाइबल कहती है, ''सबसे पहिले उसके, राज्य और धर्म की खोज करो'' (मत्ती 6:33)। परमेश्वर ने जबकि अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने का वायदा किया है तब उसका अर्थ यह नहीं होता कि हम अपनी जिम्मेदारियों को भूल जायें। हमें उसके प्रति अपनी जिम्मेवारियों को निभाना है।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी कलीसिया बनायेगा। उसने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा प्रतिज्ञा की थी कि अन्त के दिनों में परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जिसका अन्त नहीं होगा और वह अनन्तकाल तक न टूटेगा। (दानिय्येल 2:44)। मत्ती 16:13–20 में देखते हैं कि यीशु ने अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा की थी। (मत्ती 16:3–28) हम यदि परमेश्वर से प्रेम करते हैं तो उसकी कलीसिया को स्वीकार क्यों नहीं करते? पिन्तेकुस्त के दिन इस कलीसिया की स्थापना हुई थी। (प्रेरितों 2) यदि कोई अपने पापों से मन फिराकर इसका सदस्य बनना चाहता है तब उसे अपना मन फिराकर और बपतिस्मा लेना है। (प्रेरितो 2:38)। सारी आशिषें हमें प्रभु में होकर मिलती है। (इफि. 1:3–7)। बिना कलीसिया के सदस्य बने हमारे पास कोई आशा नहीं है।

मार्ग और सच्चाई और जीवन

सनी डेविड

वास्तव में हमारे पास यह एक और बड़ा ही सुन्दर अवसर है, जबकि हम अपने ध्यानों को अनेकों अन्य बातों पर से हटाकर उन बातों पर लगाने जा रहे हैं जो आत्मिक स्वभाव की है, और जिन का संबंध हमारी आत्मा के उद्धार से है। मेरा विश्वास है कि लगभग सभी मनुष्य इस बात को बिना किसी तर्क के स्वीकार कर लेंगे कि मनुष्य पापी है और उसे उद्धार की आवश्यकता है। परन्तु मनुष्य के उद्धार के संबंध में तीन बातें बड़ी ही आवश्यक हैं, अर्थात सबसे पहिले, मनुष्य को एक ऐसे मार्ग की आवश्यकता है जो उसे परमेश्वर के पास वास्तव में पहुंचा सकता है। दूसरे, मनुष्य को सच्चाई की आवश्यकता है, क्योंकि वास्तव में सच्चाई ही मनुष्य को पाप से स्वतंत्र करा सकती है। (यूहन्ना 8:32) और तीसरे, मनुष्य को एक नए जीवन की आवश्यकता है, क्योंकि मनुष्य अपने पाप-पूर्ण जीवन में होकर परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। इसलिये यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने वर्तमान जीवन से छूटकर उस नए जीवन को पहिन ले जो निष्पाप और कलंक रहित है और जो परमेश्वर को ग्रहण योग्य है।

न केवल परमेश्वर का वचन यही घोषित करता है, कि हर एक मनुष्य पापी है, और परमेश्वर की महिमा से रहित है, परन्तु यह भी प्रगट करता है, कि परमेश्वर का वरदान यीशु मसीह में हमारे लिये अनन्त जीवन है। (रोमियों 3:23; 6:23)। वास्तव में, यदि देखा जाए, तो यीशु मसीह मनुष्य के उद्धार के निमित्त परमेश्वर का एक सिद्ध मार्ग है। क्योंकि मनुष्य की प्रमुख आवश्यकताएं अर्थात मार्ग, सच्चाई और जीवन, एकमात्र यीशु मसीह में ही पूर्ण होती है। प्रभु यीशु के अपने ही शब्दों में हम देखते हैं उसने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6)।

एक यात्री के लिये मार्ग का एक बहुत बड़ा महत्व होता है। यह जानने के लिये कि वह सही मार्ग पर चल रहा है, उसे कभी-कभी एक नक्शा देखना पड़ता है, या लोगों से पूछ-ताछ करनी पड़ती है। अभी कुछ ही दिन हुए कि एक सज्जन मुझ से मिलने के लिये मेरे घर आना चाहते थे। वे यह जानते थे कि उन्हें किस स्थान पर पहुंचना है, परन्तु मार्ग से अच्छी तरह परीचित न थे। कुछ इधर-उधर पूछने के बाद जब वे उस चौराहे पर आ गए जहां से एक मार्ग मेरे घर की ओर आता है, तो उन्होंने एक व्यक्ति से पूछा, कि क्या रिंग रोड यही है? और उन्होंने जवाब देकर कहा, कि जी हां, यही है। मेरे मित्र कुछ खुश हुए कि वे अब मेरे घर के निकट आ गए हैं, और वे रिंग रोड पर चल पड़े। परन्तु लगभग डेढ़ घंटे तक साइकिल चलाने के बाद भी जब उन्हें मेरा घर न मिला, तो उन्हें बड़ी परेशानी हुई, और उन्होंने लोगों से पूछा, कि वास्तव में किस जगह है? और जवाब सुनकर उन्हें

अपने ऊपर बड़ा ही क्रोध आया, क्योंकि वास्तव में वे रिंग रोड पर तो चल रहे थे, परन्तु मार्ग पर पूरब की ओर न चलकर वे पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे, और इस प्रकार मेरे घर के निकट आने के विपरीत वे अपनी मंजिल से भटक कर और भी दूर होते जा रहे थे।

परन्तु, इस विषय पर यदि हम आत्मिक दृष्टिकोण से विचार करें, तो हम देखते हैं कि संसार में प्रत्येक मनुष्य एक यात्री है। जबकि कुछ लोगों ने अपनी यात्रा पहिले आरंभ की थी, और कुछ की यात्रा बाद में आरंभ हुई; कुछ लोगों की यात्रा का समय लम्बा होता है, जबकि कुछ लोगों की यात्रा जल्दी समाप्त हो जाती है। परन्तु एक न एक दिन हम सभी अपनी-अपनी यात्रा के अंत तक पहुंच जाते हैं, और हमारी यात्रा समाप्त हो जाती है। परन्तु हम सब कहां जा रहे हैं? यह प्रश्न बड़ा ही गंभीर है। इसमें कोई संदेह नहीं, कि हम सब प्रतिदिन अपनी यात्रा में आगे ही बढ़ रहे है। परन्तु प्रश्न यह है, कि हम किस मार्ग पर चल रहे है? क्या हमारी यात्रा का अंत आनन्दपूर्ण होगा, या शोकपूर्ण होगा? क्या हम उस यात्री की तरह यात्रा कर रहे है जो अपने मार्ग को उचित समझकर अंत तक उस पर चलता तो रहा परन्तु अन्त में उसने अपने आप को गलत जगह पर पाया? परमेश्वर के उपदेशक ने जिन बातों के विषय में चेतावनी दी, उन में से सबसे शोकजनक बात उसने यही कि "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दीख पड़ता है, परन्तु उसके अंत में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन 14:12)। प्रभु यीशु ने इसी महत्वपूर्ण बात की ओर हमारा ध्यान दिलाकर कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे है जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती 7:13, 14)। वास्तव में यह बात बिल्कुल सच है, कि जबकि संसार में अधिकांश लोग विनाश को पहुंचाने वाले चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं, बहुत ही थोड़े लोग उस सकरे मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं जो जीवन को पहुंचाता है और वह मार्ग है, प्रभु यीशु मसीह। क्योंकि वह खोए और भटके हुए लोगों को ढूंढ़ने और उन्हें बचाने के लिये आया, वह उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिये आया, और उसने कहा, मार्ग मैं हूं।

न केवल यीशु मुक्ति का मार्ग ही है परन्तु उसने कहा कि मैं सच्चाई भी हूं। सच्चाई एक बड़ा ही उत्तम सिद्धांत है। हम सभी सच्चाई सुनना चाहते हैं। हम में से कोई भी जान-बूझकर झूठ पर विश्वास नहीं करना चाहता, और यद्यपि हम किसी झूठ को सच्चाई समझकर मान भी लें, तोभी सच्चाई सच्चाई ही है। यदि हम परमेश्वर की भक्ति वा उपासना उसकी बताई हुई इच्छानुसार न करें, यदि हम परमेश्वर के दिए हुए मुक्ति के मार्ग पर न चलें, तो हमारी भक्ति, उपासना, इत्यादि सभी व्यर्थ ठहरेंगे। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाकर यों ही नहीं छोड़ दिया कि वे सब अपनी-अपनी इच्छानुसार उसकी भक्ति या उपासना करें, और अपनी-अपनी इच्छा से अपने उद्धार के अलग-अलग मार्ग चुन लें। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य को एक सिद्ध मार्ग दिया है, उसने मनुष्य पर अपनी सच्चाई को प्रगट किया है, ताकि वह सच्चाई की प्रतीति करे और उस पर चलकर स्वर्ग में अनन्त जीवन को प्राप्त करे।

जीवन का महत्व हमारे निकट बड़ा ही अधिक है। हम सब जीवन से प्रेम करते हैं। हम सब अधिक से अधिक जीवन देखने की इच्छा रखते हैं। यदि हम बीमार पड़ जाते हैं, और कोई रोग बड़ा ही गंभीर रूप ले लेता है, तो हमारी चिंता का ठिकाना नहीं रहता। हम यों ही बैठकर अपने अंतिम दिन नहीं गिनने लगते परन्तु हम पूरा प्रयत्न करते हैं कि हम जल्दी से जल्दी चंगे हो जाएं। हम डॉक्टर के पास जाते हैं, दवाई लेते हैं, और जो कुछ भी हम से बन पड़ता है, हम अपना भरसक प्रयत्न करते हैं कि हम बच जाएं। क्योंकि हम जीना चाहते हैं, हम मरना नहीं चाहते, हम जीवन से प्रेम करते है।

परन्तु तौभी, सच्चाई यह है, कि आत्मिक दृष्टिकोण से मनुष्य एक बड़े ही नाशक रोग से ग्रस्त है, क्योंकि मनुष्य पापी है। पाप वास्तव में बड़ा ही भयानक रोग है, यह रोग बढ़ने और फैलने वाला रोग हैं। पाप न केवल मनुष्य के शरीर को ही हानि पहुंचाता है, परन्तु मनुष्य की आत्मा को भी नरक में अनन्त विनाश का दण्ड दिलवाता है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत ही कम लोग अपनी आत्मा के महत्व को जानते हैं, बहुत ही थोड़े लोग स्वर्ग वा नरक और न्याय और अनन्तकाल की वास्तविकताओं से परिचित है।

मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। परमेश्वर आत्मा है। और मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार सृजा गया है। परमेश्वर अनन्त है, अर्थात वह सदा बना रहेगा। और इसी प्रकार मनुष्य जो कि परमेश्वर के आत्मिक स्वरूप पर सृजा गया है, आत्मिक भाव से सदा उपस्थित रहेगा। परमेश्वर पवित्र है, अर्थात उसमें कोई बुराई नहीं है और इसलिये वह स्वर्ग में है। परन्तु मनुष्य पापी और अधर्मी है, उसमें कलंक है, और इस कारण वह स्वर्ग में प्रवेश न करके नरक में पहुंचता है, जहां वह सदा अनन्त दुख में रहेगा। नरक वा स्वर्ग दोनों ही अनन्त है, अर्थात उनका कभी अंत न होगा, और इसी प्रकार मनुष्य भी आत्मिक भाव से, परमेश्वर की तरह, अनन्त है, अर्थात मृत्यु के बाद बनुष्य जब अनन्तकाल में प्रवेश करता है, तो वह चाहे नरक में प्रवेश करे या स्वर्ग में, जहां भी वह जाएगा, वही वह अनन्तकाल तक बना रहेगा। इसी बात पर बल देकर, प्रभु यीशु ने एक बार कहा, कि अधर्मी अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती 25:46)। अर्थात अधर्मी नरक में प्रवेश करेंगे और धर्मी स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।

परन्तु स्वर्ग में केवल यही लोग प्रवेश करेंगे जो परमेश्वर के पास पहुंचेगे, क्योंकि स्वर्ग में है। और परमेश्वर के पास पहुंचने का केवल एक ही मार्ग है, अर्थात यीशु मसीह, जो परमेश्वर और मनुष्यों के बीच संसार में एक बिचवई बनकर आया ताकि उसके द्वारा सारी मनुष्य जाति अपना मेल परमेश्वर के साथ कर ले। सो उसने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।"

यदि आप स्वर्ग में परमेश्वर के पास पहुंचना चाहते हैं, तो उसके मार्ग पर चलें, उसकी सच्चाई का पालन करें, और उसके पुत्र यीशु में होकर नए जीवन को पहिन ले। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने

मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों 3:26, 27)। परमेश्वर का सदा स्थिर रहने वाला वचन, जिसके द्वारा हर एक मनुष्य का न्याय होगा, आपकी आत्मा की अगुवाई करे, ताकि आप उसके मार्ग पर चलें और उसकी सच्चाई को ग्रहण करें और उस अनन्त जीवन को प्राप्त करें जिसे देने के लिये हमारा उद्धारकर्ता स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया। उसी की महिमा युगानयुग होती रहे।

बपतिस्मे द्वारा कैसे उद्धार होता है?

जे. सी. चोट

अपने इस पाठ में हम यह देखना चाहते है कि बपतिस्में के द्वारा कैसे उद्धार होता है?

अधिकतर लोग बपतिस्में को अच्छी प्रकार से समझ नहीं पाते और वे यही कहते हैं कि उद्धार के लिये बपतिस्मा लेना कोई आवश्यक नहीं है। अधिकतर लोग और प्रचारक यही सिखाते हैं कि केवल यीशु में विश्वास करने से ही उद्धार होता है, परन्तु बाइबल इसके बारे में क्या सिखाती है?

बपतिस्में शब्द का अर्थ ही गाड़े जाना है। प्रेरित पौलुस ने कहा था, "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।" (कुलु. 2:12)। फिर से वह कहता है, क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गये ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चल चले (रोमियों 6:3-4)।

बाईबल केवल यही नहीं बताती कि बपतिस्मा गाड़े जाना है बल्कि यह भी बताती है कि इसका अर्थ है जल में गाड़े जाना। इस बात के विषय में हम प्रेरितों के 8 अध्याय में पढ़ते हैं जहां लिखा है कि खोजा और फिल्लिपुस दोनों जल में उतर पड़े और वहां खोजे को उसने जल में बपतिस्मा दिया। (प्रेरितों 8:39)।

अब हमने यह देख लिया कि बपतिस्मा क्या है और इसका कितना महत्व है? सबसे पहिले हम यह देखते है कि यह परमेश्वर की आज्ञा है। पतरस ने प्रचार करने के बाद कुरनेलियुस और उसके परिवार से कहा था ''अब जल को कोई रोक सकता है, कि यह बपतिस्मा न पाए? ओर उसने आज्ञा दी कि उन्हें बपतिस्मा दिया जाए।'' (प्रेरितों 10:43-48)। दूसरी बात हम यह देखते हैं कि बपतिस्मा उद्धार करता है। पतरस फिर से नूह का उदाहरण देते हुए कहता है? और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात बपतिस्मा यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है। उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है परन्तु शुद्ध विवेक से

परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।'' (1 पतरस 3:21)। तीसरी बात हम यह देखते हैं कि जब यीशु ने चेलों को प्रचार करने की महान आज्ञा दी थी तो उसने कहा था, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जायेगा।" (मरकुस 16:15,16)।

एक और बड़ी आवश्यक बात जो बपतिस्में के विषय में है कि बपतिस्मे के द्वारा पाप क्षमा होते हैं। पतरस ने अपने प्रचार में कहा था, ''जब लोगों ने उससे पूछा कि हम क्या करें? उसने उनका उत्तर देते हुए उनसे कहा कि मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।'' (प्रेरितों 2:38)। बपतिस्में के विषय में एक और विशेष बात हम देखते हैं कि यह पापों को धो डालता है। पौलुस से कहा गया था, ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।'' (प्रेरितों 22:16)।

प्रेरित पौलुस प्रचार करते हुए कहता है कि क्या तुम नहीं जानते? कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चले (रोमियों 6:3-4)। और फिर मसीहियों को लिखते हुए कहता है "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों 3:26)।

सातवीं बात हम यह देखते हैं कि बपतिस्मा हमें देह या कलीसिया में मिलाता है। कुरिन्थ की कलीसिया को लिखते हुए कहता है, ''क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक ही देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।" (1 कुरि. 12:13)।

आठवीं बात जो हम देखते हैं वो यह है कि बपतिस्में के द्वारा नया जन्म होता है। हम पढ़ते हैं ''यीशु ने उसको उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता। निकुदेमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया कि मैं मुझसे सच सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यूहन्ना 3:3-5) यहां यीशु निकुदेमुस को सिखा रहा था कि यीशु का राज्य क्या है और उसमें कैसे प्रवेश किया जा सकता है? बाद में हम देखते है कि बपतिस्मा के द्वारा उसमें प्रवेश किया जा सकता है। बपतिस्मे का अर्थ है जल में गाड़े जाना यह है नया जन्म जिसके विषय में यीशु बात कर रहा था। मत्ती 28:19-20 में यीशु ने कहा था कि जो प्रभु की आज्ञा को मानते हैं वे पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा लेते हैं।

प्रेरित पौलुस बताता है कि बपतिस्मा केवल एक है। (इफिसियों 4:5)। यह बात पौलुस ने सन् 64 ईसवीं में बोली थी। और यह इसलिये ताकि लोग जाने की बपतिस्मा केवल एक है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम लगभग ग्यारह मन परिवर्तन की घटनाएं पढ़ते है। प्रत्येक घटना में लोगों को बपतिस्मा लेने के लिये कहा गया था।

बाइबल बताती है बपतिस्मा हमें बचाता है अर्थात पापों से हमारा उद्धार करता है। बाइबल बपतिस्मे की आज्ञा पर बहुत ज़ोर देती है। हमें यह समझना चाहिए कि बपतिस्मा हमें बचाता है न कि जल के द्वारा उद्धार होता है। हम वचन को सुनकर जब विश्वास करते हैं तथा यीशु के नाम का अंगीकार करते हैं और अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा लेते है तब यीशु अपनी कलीसिया में हमें मिला देता है। (रोमियों 10:17; इब्रा. 11:6; यूहन्ना 8:24; लूका 13:3; मत्ती 10:32 और मरकुस 16:16)।

जब हम बपतिस्मा लेते हैं तब यीशु की मृत्यु में गाड़े जाते हैं, अर्थात अपने पापों के लिये मर जाते हैं। क्या आपने अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है? यदि नहीं तो इस के विषय में विचार कीजिये। बपतिस्मा आपको प्रभु की देह अर्थात कलीसिया में मिला देगा। (प्रेरितों 2:47)।

चर्च ऑफ़ क्राईस्ट

1. बाईबल ही केवल हमारी गाईड और कुंजी है। (रोमियों 1:16; 1 थिस्स. 2:13)।
2. मसीह का नाम, यह कलीसिया अपने उपर रखती है। (रोमियों 16:16)।
3. उचित स्थान पर इसकी स्थापना हुई थी। (यशायाह 2:2, 3, प्रेरितों 2)।
4. यह उचित समय पर बनी थी। (योएल 2, प्रेरितों 2)।
5. इसका बनाने वाला उचित व्यक्ति था। (मत्ती 16:18 प्रेरितों 2 : 36)।
6. उद्धार पाये हुए लोगों की मण्डली है (इफि. 5:23, प्रेरितों 2:47)
7. इसके सदस्यों का नाम (इब्रानियों 12:23) स्वर्ग में लिखा है।
8. सदस्यता के लिये आज्ञा मानना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 2:41-47; 1 कुरि. 12:13)।

परमेश्वर की उद्धार की योजना

1. परमेश्वर के बचन को सुनना (रोमियों 10:17; प्रेरितों 16:32)।
2. विश्वास करना (मरकुस 16:16; इब्रानियों 11:6)।
3. मन फिराना (प्रेरितों 2:38; लूका 13:3; प्रेरितों 17:30)।
4. अंगीकार करना (रोमियों 10:9; 10 प्रेरितों 8:37)।
5. बपतिस्मा लेना (प्रेरितों 2:38; मरकुस 16:16; पतरस 3:21; रोमियों 6:3-4)।
6. मसीही बनने के बाद विश्वास योग्य जीवन जीना (1 पतरस 2:11, 12, प्रकाशित 2:10)।

सब वस्तुओं का आरंभ कैसे हुआ?

इरा वाई राइस

परिचय: हर युग में मनुष्य इस बात की खोज में रहा है कि पृथ्वी, आकाश, जीवित वस्तुएं और वह स्वयं सब कैसे आरंभ हुआ? जिसमें "नैबुलर" (अस्पष्ट) प्लैनिटेसिमल (ग्रहाणु) और इवोल्युशनरी (विकासवादी) थ्यौरियां या अनुमानों सहित कई निष्कपट थ्यौरियां (अनुमान) बनाई गई है। बाइबल इस बात पर कोई थ्यौरी नहीं देती यानी अनुमान नहीं लगाती है कि सब वस्तुओं का आरंभ कैसे हुआ। इसके विपरीत यह इन बातों को केवल तथ्यों के रूप में बताती है, जैसा कि यहां पता चलता है:

1. आदि में परमेश्वर ने आकाश ओर पृथ्वी की सृश्टि की - उत्पत्ति 1:1

क. पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी - आयत 2
ख. गहरे जल के ऊपर अंधियारा था - आयत 2
ग. परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था - आयत 2
घ. परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो - आयत 3
1. उजियाला हो गया।
2. परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि यह अच्छा है - आयत 4
ड. परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग किया - आयत 4
च. परमेश्वर ने उजियाले को दिन कहा - आयत 5
छ. परमेश्वर ने अंधियारे को रात कहा - आयत 5
ज. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया - आयत 5

2. परमेश्वर ने कहा, जल के बीच एक अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए - 6

क. तब परमेश्वर ने अन्तर को बनाया।
ख. अन्तर ने अपने नीचे के जल को अपने ऊपर के जल से अलग कर दिया - आयत 7
नोट : यह अन्तर वही है जिसे हम आमतौर पर आकाश कहते हैं।
ग. परमेश्वर ने अन्तर को आकाश कहा - आयत 8
घ. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया - आयत 8

3. फिर परमेश्वर ने कहा, आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इक्ट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे - आयत 9

नोट :विचार करें कि परमेश्वर का वचन कितना सामर्थ से भरा था। सृष्टि की हर बात में, परमेश्वर ने केवल कहा और वैसा ही हो गया।

क. परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा - आयत 10
ख. इक्ट्ठे हुए जल को समुद्र कहा - आयत 10
ग. परमेश्वर ने देखा क वह अच्छा है।
घ. परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से :
1. हरी घास

2. बीज वाले छोटे-छोटे पेड़
3. फलदायी वृक्ष हो
क. जिनके फल उनकी जाति के अनुसार
ख. जिनके बीज उनकी जाति के अनुसार हो
ड. वैसा ही हो गया (आयत 11) पृथ्वी से :
1. हरी घास
2. बीज वाले छोटे-छोटे पेड़
3. फलदायी वृक्ष उगे
च. परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है - आयत 12
छ. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया - आयत 13

4. परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हो; और वे चिन्हों और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों, और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देने वाली भी ठहरें और वैसा ही हो गया - आयतें 14-15

क. परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाई :
1. बड़ी ज्योति दिन पर प्रभुता करने के लिए - आयत 16
2. छोटी ज्योति रात पर प्रभुता करने के लिए - आयत 16
ख. उसने तारागण को भी बनाया।
ग. परमेश्वर ने उनको आकाश के अन्तर में रखा - आयत 17
1. पृथ्वी पर प्रकाश देने के लिए।
2. दिन और रात पर प्रभुता करने के लिए - आयत 18
3. उजियाले को अंधियारे से अलग करने के लिए - आयत 18
घ. परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
ड. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौथा दिन हो गया - आयत 19

5. परमेश्वर ने कहा, जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें - आयत 20

क. परमेश्वर ने जाति-जाति के बड़े बड़े जल जन्तुओं की जो पानी में चलते फिरते हैं, सृष्टि की - आयत 21
ख. जल उनकी जातियों से बहुत ही भर गया - आयत 21
ग. हर जाति के उड़ने वाली पक्षी भी बनाए गए - आयत 21
घ. परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है - आयत 21
ड. परमेश्वर ने यह कहकर उनको आशीष दी, फूलों-फलो, और समुद्र के जल में भर जाओ और पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें - आयत 22
च. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पांचवां दिन हो गया।

6. परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक-एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात घरेलू पशु, और रेंगने वाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु जाति-जाति के अनुसार

उत्पन्न हो - और वैसा ही हो गया - आयत 24

क. परमेश्वर ने

1. पृथ्वी के जाति जाति के वन पशुओं को - आयत 25
2. जाति जाति के घरेलू पशुओं को
3. जाति जाति के भूमि पर सब रेंगने वाले जन्तुओं को बनाया।

ख. परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

ग. परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, और वे समुद्र की मछलियों ओर आकाश के पक्षियों और घरेलू पशुओं और सारी पृथ्वी पर और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें - आयत 26

1. परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया - आयत 27

क. परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया।

ख. नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की।

2. परमेश्वर ने उनको आशीष दी-

क. फूलो फलो

ख. और पृथ्वी में भर जाओ और उसको अपने वश में कर लो।

ग. अधिकार रखो

1. समुद्र की मछलियों पर
2. आकाश के पक्षियों पर
3. पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर
4. परमेश्वर ने कहा, सुनो, जितने बीज वाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर है और जितने वृक्षों में बीज वाले फल होते हैं, वे सब मैं ने तुम को दिए हैं, वे तुम्हारे भोजन के लिये है, और जितने पृथ्वी के पशु और आकाश के पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तु हैं, जिन में जीवन के प्राण हैं, उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे-हरे छोटे पेड़ दिए हैं- और वैसा ही हो गया - आयतें 29-30।

घ. परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है - आयत 31

ड. सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया - आयत 31

7. यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाया समाप्त हो गया - उत्पत्ति 2:1

क. परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था, सातवें दिन समाप्त किया - आयत 2

ख. परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया - आयत 2

ग. परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसने उसमें सृष्टि की रचना के अपने सारे काम से विश्राम किया - आयत 3।

एलोहीम

बैटी बर्टन चोट

भाग दो

पवित्र आत्मा

समय का आरंभ होने से पहले से, परमेश्वर को मालूम था कि मनुष्य पाप करेगा, और वे अपने आपको शुद्ध करने के लिए कुछ भी नहीं कर पाएंगे और यह कि पाप हमें उससे अनन्तकाल के लिए अलग कर देगा। सो प्रकाशितवाक्य 13:8 के अनुसार मसीह जगत की उत्पत्ति के पहले से वध किया हुआ मेमना था। यह योजना पहले से ही बन गई थी।

लेकिन परमेश्वर यह भी जानता था कि मनुष्य को, उसकी अगुआई तथा सामर्थ के बिना अकेला छोड़ दिए जाने पर वह गिर जाएगा। अपने पकड़वाए जाने तथा क्रूस पर मरने से पहले यीशु ने अपने चेलों को यह वायदा करते हुए यकीन दिलाया था "मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा" (यूहन्ना 14:16, 17)।

9. यीशु के स्वर्ग में ऊपर उठा लिये जाने के अगले पिंतेकुस्त वाले दिन प्रेरितों के ऊपर पवित्र आत्मा बहाया गया (यह "आत्मा का बपतिस्मा" था), जिससे वे सुसमाचार के संदेश को बोलने और लिखने के योग्य हो गए। उनके काम के द्वारा संसार के आरंभ से बनाई गई परमेश्वर की योजना उसके परिवार अर्थात कलीसिया की स्थापना में पूरी हो गई।

10. उन आरंभिक सालों के दौरान कलीसिया कैसी होती थी? इसमें बपतिस्मा पाए हुए विश्वासी, जो अपने नये-नये विश्वास में नवजात थे, सब मिलकर काम करते, घरों में आराधना के लिए इकट्ठा होते थे। उनके पास कोई नया नियम नहीं था, जैसे कि हमारे पास है। समय बीतने पर उन "पत्रों" के जिन्हें पवित्र आत्मा ने लिखने के लिए चुने हुए लोगों को प्रेरणा दी, लिखे जाने पर पत्रों की हाथ से लिखी गई प्रतियां बनाई गई और इधर-उधर फैली हुई मण्डलियों में वितरित की गई, जिससे उन्हें उनकी आत्मिक उन्नति के लिए परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त निर्देश मिल सका।

प्रेरित हर जगह नहीं जा सकते थे, इस कारण परमेश्वर ने उन्हें कुछ चुने हुए मसीहियों को आश्चर्यकर्म करने के विशेष दान देने के लिए उनके उुपर हाथ रखने की सामर्थ दी। चंगाई देने, भविष्यवाणी करने, वचन का प्रचार करने, उन भाषाओं को बोलने जिन्हें सीखा नहीं था, नवजात कलीसियाओं को बने रहने और आगे बढ़ने के योग्य बनाने में जो भी आवश्यक था, देने के लिए। प्रेरितों के अनुसार इस प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा कोई आश्चर्यकर्म तो कर सकता था, पर वह दूसरों

को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ आगे नहीं दे सकता था। इसका अर्थ यह हुआ कि जब प्रेरित मर गए, और वे भी जिन्हें उनके हाथ रखने के द्वारा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी गई थी, तो आश्चर्यकर्मों का युग समाप्त हो गया। इसका उद्देश्य संदेश देने वालों तथा उनके संदेश की प्रामाणिकता की पुष्टि करना था, सो नये नियम के लिखे जाने (यूहन्ना के प्रकाशन) के पूरा होने के साथ आश्चर्यकर्मों के द्वारा पुष्टि की जाने की कोई आवश्यकता नहीं रही (मरकुस 16:20)।

11. तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा का काम बंद हो गया और मसीही लोगों को अपने आत्मिक जीवन में अकेले चलना पड़ता है? क्या मसीह ने यह वायदा नहीं किया कि उसने हमें अकेले नहीं छोड़ना था? तो क्या वह वायदा केवल प्रेरितों के साथ था?

पवित्र आत्मा के इस वक्त के काम से संबंधित बाइबल के कुछ हवालों को देखें। यदि हम उनका अर्थ अक्षरश: लें कि ये बताते हैं कि पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में यह काम करता है:

1. बपतिस्मा लेने पर आत्मा के द्वारा हमारा जन्म होता है (यूह 3:3-5)।
2. वह हमारा सहायक है (यूह. 14:16-18)।
3. वह हमारे छुटकारे का बयाना है (2 कुरि. 1:22)।
4. वह हमारा बयाना है (2 कुरि. 5:5)।
5. हमारे लिए उसे शोकित करना संभव है (इफि. 4:30)।
6. हमारे लिए उसे बुझाना संभव है (1 थिस्स. 5:19)।
7. वह हमारी अगुआई करता है (गला. 5:18)।
8. हम उस में रहते हैं (2 कुरिन्थियों 3:6)।
9. हम उसमें चलते हैं (गला. 5:16)।
10. उसी के द्वारा हम फल लाते हैं (गला. 5:22-23)।
11. उसी के द्वारा हम देह, यानी कलीसिया में प्रवेश करते हैं (1 कुरि. 12:13)।
12. वह हम में वास करता है (2 तीमु. 1:14; 1 कुरि. 3:16, 17)।
13. वह हम में रहता है (1 यूह. 4:13)।
14. वह हमें सामर्थ देता है (इफि. 3:16-21)।
15. उसी के द्वारा हम देह की क्रियाओं को मारते हैं (रोमि. 8:13)।
16. वह गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं (रोमि. 8:16)।
17. वह हमारे लिए विनती करता है (रोमि. 8:27; इफि. 2:18)।
18. वह हमारे लिए आहें भरता और बयान से बाहर शब्दों का इस्तेमाल करता है (रोमि. 8:26)।
19. वह हमें सिखाता है (1 कुरि. 2:13)।
20. वह जांचता है (1 कुरि. 2:14)।
21. उसमें हम प्रार्थना करते हैं (यहूदा 19, 20)।
22. वह हमें जीवन देता है (यूह. 6:63)।
23. वह हमें स्वतंत्रता दिलाता है (2 कुरि. 3:17)।

24. हमारे दर्पण में मसीह के चेहरे को देखने पर, वह हमें बदल देता है (2 कुरि. 3:18)।
25. उसके द्वारा हम जीवन की कटनी काटते हैं (गला. 6:8)।
26. उसके द्वारा हमारी पहुंच पिता तक होती है (इफि. 2:18)।
27. आत्मा की सामर्थ के द्वारा हमारी आशा बढ़ती है (रोमि. 15:13)।
28. आत्मा ही के द्वारा हम परमेश्वर का निवास स्थान बनते हैं (इफि. 2:22)।
29. कलीसिया के साथ-साथ वह भी कहता है, "आओ" (प्रका. 22:17)।

यह शब्दावली अपने आप में ही, बड़ी मजबूती के साथ यह संकेत देती है कि हम जब मिलकर अपने उद्धारकर्ता की बाट जोहते हैं, तो पवित्र आत्मा इस संसार में कलीसिया के साथ रह रहा होता है।

भरोसा जो हमें सौंपा गया है

हमने परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों अर्थात यहोवा परमेश्वर, के पुत्र यीशु मसीह तथा पवित्र आत्मा का अध्ययन किया है। परन्तु हमें संसार के पहले से उनके उद्देश्य तथा उनके काम के बारे में क्या पता चला है?

कि उसका फोकस और जो कुछ उसने किया है, अंत में उस सब के प्राप्तकर्ता मनुष्य हैं।

क. उसने हमें अपने स्वरूप पर अर्थात अविनाशी आत्माएं बनाया है ताकि हम कभी न मरें।

ख. वचन मनुष्य के रूप में जन्मा, ताकि वह हमें पाप से छुड़ाने के लिए हमारे लिए मर सके।

ग. हमारा बपतिस्मा होने अर्थात उसके आत्मिक रूप में उसके परिवार में जन्म लेने पर, हमें हमारी आत्मा के साथ उसके आत्मा के वास के द्वारा हमें आत्मिक मृत्यु से उसके साथ जिलाया जाता है।

घ. हमें उसके लहू के द्वारा पाप से लगातार धोया जाता है (1 यूहन्ना 1:7)।

परन्तु एक अंतिम विचार किया जाना आवश्यक है। हमारे प्रभु के स्वर्ग में लौट जाने से पहले उसने क्या किया? यीशु ने उनके पास आकर कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानाना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:18-20)।

जिस लक्ष्य को पाने के लिए वह आरंभ से काम कर रहा था, वह पापी मनुष्य के लिए उस तक बहाली का मार्ग था। यह काम केवल लोगों द्वारा सुसमाचार को सुनकर उसे मानने से ही हो सकता है, ताकि वे परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया में उसकी संतान बन सकें। आवश्यक अगुआई के लिए उसने नया नियम दे दिया है, पर संसार तक संदेश को पहुंचाने का वास्तविक कार्य मनुष्य के हाथों में दिया गया है।

इस पर विचार करें, परमेश्वर का अबदी कार्य अर्थात उद्धार का अनन्त दान, हमारे हाथों में रखा गया। हम इसका क्या करें? क्या हम उदासीन होकर इसे खामोशी से दबाएं रखें, अपने साथ ही इस संदेश को मरने दें, या खोए हुए संसार में परमेश्वर की आवाज बन जाएं?

कहानी बताई जाती है जिसमें स्वर्गदूत यीशु के मानवीय देह में जन्म लेने, उसकी सुनने वाले को उन्हें सिखाने के उसके काम को, देख रहे थे। उसकी मौत पर वे डर से सहम गए और फिर उसके कब्र में से जी उठने पर विजय का आनन्द मनाने लगे। जय जयकार जब वह स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया और अपने सिंहासन पर जा बैठा तो वे उत्सुकता से उसकी ओर बढ़े।

अब हमें पता चला कि आप इतने समय से क्या कर रहे थे। वे पुकार उठे, चलो चलकर संसार को बताते हैं कि आप उन्हें बचाने के लिए मर गए।

नहीं, यीशु ने उत्तर दिया। यह तुम्हारा काम नहीं है।

तो फिर, यह किसका काम है? वे हैरान होकर पूछने लगे।

मैंने अपने चेलों को सौंप दिया है।

क्या कहा??? क्या आपने वह अबदी कार्य मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया? वे अविश्वासी से होकर पूछने लगे।

हां, यीशु ने उत्तर दिया।

पर प्रभु, स्वर्गदूतों ने एतराज जताते हुए कहा, आप मनुष्यों पर भरोसा नहीं कर सकते। संसार में पाप आदम और हव्वा ही लेकर आए थे। यहूदा ने आपके साथ विश्वासघात किया था। यहां तक कि शमौन पतरस ने भी आपका इंकार किया। और आप ने सब कुछ उसी के हाथों में, और उन मनुष्यों के हाथों में, आने वाले युगों तक दे दिया?

हां, प्रभु ने उत्तर दिया।

पर निश्चय ही, यदि वे नहीं कर पाए, तो निश्चय ही आपके पास कोई और योजना होगी।

नहीं मेरी कोई और योजना नहीं है...।

उस खजाने का जो हमें सौंपा गया है।

गीत गाना

जैरी बेट्स

एक मसीही के लिए आराधना के सभी कार्य आनन्द देने के लिए होने चाहिए, परन्तु उनमें से अगर एक कार्य से अधिकतर लोगों को अधिक आनन्द मिलता है तो वह गाना ही होगा। बहुत बार लोग अपने आप में गुनगुनाते या कोई मनपसंद गीत गा रहे होते हैं, वे ऊंचे स्वर में भी गा रहे हो सकते या फिर मन ही मन खामोशी से। गाना मसीही आराधना का एक महत्वपूर्ण भाग है, फिर भी यह सबसे

विवादपूर्ण भाग भी है। अपने दिमाग को खोलें और परमेश्वर को बाइबल के द्वारा आपसे बात करने दें।

गाने के संबंध में नये नियम के दो आदर्श हवाले इफिसियों 5:19 और कुलुस्सियों 3:16-17 हैं। वे एक दूसरे से बिल्कुल मिलती-जुलती है। "और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और क्रीर्तन करते रहो" (इफिसियों 5:19)। "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक-दूसरे को सिखाओ, और चिताओ और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो" (कुलुस्सियों 3:16-17)।

गाने के उद्देश्य

गाना सिखाने का एक तरीका है। गाए जाने वाले गाने के बोलों के द्वारा हम एक दूसरे को समझा रहे होते हैं। समझाने का काम केवल शब्द ही करते हैं इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि शब्द साफ-साफ आ सकें। और उनसे पवित्र शास्त्र का सबक ही सिखाया जाए। गलत शिक्षा को गाना भी उतना ही गलत है जितना गलत शिक्षा देना है। यदि हम किसी नियम को संगीत की लय में ढाल सकें तो उसे याद रखना आमतौर पर आसान हो जाता है। बच्चों को सिखाने के बेहतरीन ढंगों में से एक उन्हें गानों के द्वारा सिखाना होता है। इससे उन्हें आसानी से सिखाया जा सकता है और उनके लिए यह मनोरंजन होता है। इस प्रकार गाना, सिखाने का बहुत अच्छा ढंग है। इस विचार से लय का इतना महत्व नहीं रहता है क्योंकि सिखाने और सुधारने का काम केवल शब्दों से हो सकता है। हमें आत्मिक गीत गाने आवश्यक हैं, न कि वे गीत जो हमें पसंद हों या जो सुनने में अच्छे लगते हों। लोग आमतौर पर भजनों, स्तुतिगानों और आत्मिक गीतों में अन्तर के बारे में पूछते हैं। स्टीक अन्तर बता पाना कठिन है। इन शब्दों का इस्तेमाल आमतौर पर एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है इसलिए लगता है कि गानों की अलग-अलग किस्मों में अंतर करने का कोई प्रयास नहीं किया जाना चाहिए।

हम एक दूसरे को सिखाते भी हैं, जो हमारी आराधना के दो तरफा पहलू पर जोर देता है। इसके परिणामस्वरूप हम एक दूसरे का सुधार कर रहे होते हैं। उन गीतों से जो पवित्र शास्त्र के किसी नियम पर जोर देते हैं बढ़कर अधिक प्रोत्साहित कर सकती है। हम एक दूसरे को सिखाते हैं, इसलिए यह पूरी मण्डली के गाने में शामिल होने पर जोर देता है, बजाय इसके कि केवल कुछ लोग गाएं, जैसे भजन मण्डली या क्वायर या अन्य छोटे-छोटे समूह, जिसमें केवल कुछ लोग गाते हैं जबकि दूसरे उन्हें सुनते हैं। केवल गाना ही एक ऐसा कार्य है जिसमें पूरी मण्डली मिलकर एक सुर में भाग ले सकती है।

गाना एक आत्मिक बलिदान है। "इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें" (इब्रानियों 13:15)। यह आयत बलिदानों के पुराने सिस्टम की बात करते हुए यह घोषणा करती है कि गाना पुराने नियम में दिए जाने वाले शारीरिक बलिदानों का हमारा आत्मिक प्रतिरूप है। अपने गानों में हम उन बड़ी आशिषों के लिए धन्यवाद देने के साथ-साथ परमेश्वर के अदभुत कामों के लिए उसकी महिमा करते है। इस प्रकार हमें इससे यह याद रखना आवश्यक है कि गाने के द्वारा हम परमेश्वर के साथ बातचीत कर रहे हैं। गाने में हमारा सब कुछ यानी हमारी आत्मा, हमारा मन, हमारा दिल और हमारे होंठ लगे होते हैं। इफिसियों 5:19 हमें अपने-अपने मनों में लय बनाने की आज्ञा देता है। जब हम गाते हैं तो हमारे नम और हमारे दिल गीत के संदेश के साथ सुर मिलाते हुए होने आवश्यक है; नहीं तो मेरा गाना केवल दिखावटी रस्म रह जाएगी। इसके सिवाय कुछ नहीं। परमेश्वर खोखली रस्मों से कभी खुश नहीं होता।

गीत गाना कलीसिया की एकता पर जोर देता है। रोमियों 15:6 में पौलुस रोम के मसीही लोगों से "एक मन और एक स्वर में" परमेश्वर की महिमा करने का आग्रह करता है। नये नियम की कई आयतें कलीसिया की एकता पर जोर देती है। परन्तु गाना मधुर संबंध बनाने का एक तरीका है जो हमारा एक दूसरे के साथ होना चाहिए। इससे भी बढ़कर यदि हमारे आत्मिक परिवार में एकता नहीं है तो परमेश्वर की आराधना भी प्रभावित होती है। मसीही लोगों के मिलकर इकट्ठे गाने से बढ़कर जैसे वे एक ही स्वर में गा रहे हैं, कोई और बात नहीं है जो प्रेरणा देने वाली है।

परमेश्वर किस प्रकार अनुमति देता है

बहुत से लोग इस बात को गलत समझते हैं कि हमें उसके लिए जो हम करते हैं, के लिए अधिकार कैसे मिलता है, विशेषकर आराधना में। दो प्रकार की आज्ञाएं होती हैं, एक सामान्य आज्ञाएं हैं और दूसरी विशिष्ट आज्ञाएं होती है। सामान्य आज्ञा बिना यह स्पष्ट किए बिना होती कि कोई काम कैसे किया जाए किसी काम को करने की अनुमति देने वाली सामान्य बात होती है। दूसरी ओर विशिष्ट आज्ञा में स्पष्ट किया जाता है कि कोई काम कैसे किया जाना आवश्यक है। कुछ उदाहरणों पर ध्यान दें। परमेश्वर हमें जाकर सुसमाचार सुनाने की आज्ञा देता है, जो कि सामान्य आज्ञा है, क्योंकि जाने या सिखाने का कोई विशिष्ट ढंग नहीं बताया गया है। नूह से गोपेर की लकड़ी का जहाज बनाने को कहा गया था किसी भी प्रकार की लकड़ी का प्रयोग करना है यह स्पष्ट आज्ञा दी गई। इस प्रकार उसे किसी भी अन्य प्रकार की लकड़ी का इस्तेमाल करने की मनाही थी। संगीत सामान्य शब्द है जिसमें वाद्य संगीत हो या कण्ठ संगीत, हर प्रकार का संगीत आ जाता है। यदि परमेश्वर ने हम से केवल संगीत का इस्तेमाल करने को कहा होता तो मसीही लोगों के पास किसी भी प्रकार का संगीत इस्तेमाल करने का विकल्प होना था।

परन्तु परमेश्वर ने संगीत की किस्म से गीत गाने को स्पष्ट किया। यह बात खुद-ब-खुद संगीत की अन्य किस्म को खारिज कर देता है। इस प्रकार के साज बाहर हो जाते हैं। बेशक परमेश्वर ने हमें साजों का इस्तमाल न करने के लिए साफ-साफ कहीं नहीं बताया है।

इतिहास में साज

बहुत से धार्मिक समूह अपने गाने के साथ साजों का इस्तेमाल करते हैं। यह इतना आम हो गया है कि इस पर कोई सवाल भी नहीं कि यह सही है या नहीं। परन्तु शुरू से ऐसा नहीं था। केवल पिछली कुछ सदियों में ही साजों का इस्तेमाल बढ़ गया है और इस पर कोई सवाल ही नहीं करता। नये नियम में हमें आराधना में केवल गाने को कहा गया है क्योंकि आराधना में गाने के साजों का कोई उल्लेख नहीं है। संगीत दो प्रकार का होता है, एक कण्ठ संगीत है और दूसरा वाद्य संगीत। आराधना में जोर आत्मिक होने पर दिया जाना आवश्यक है, जबकि गाने के साजों का जोर हमारे ऊपर यानी सांसारिक है। पौलुस ने बजाने की आज्ञा तो दी है पर इस पर जिस साज को बजाने की बात वह कह रहा है वह दिल का साज है। यानी दिल के साज और स्वर का सुर, सुर और ताल मिलकर संगीत बनते हैं।

कुलुस्सियों 3:17 मनुष्य को हर काम यीशु के नाम में यानी यीशु के अधिकार से करने की आज्ञा देता है। हम यीशु के अधिकार से कैसे गा सकते हैं जब उस साज को जोड़ देते हैं जिसका हमें कोई अधिकार नहीं है? वचन साजों पर बिल्कुल खामोशी है इसलिए बहुत से लोग दावा करते हैं कि उन्हें गलत नहीं कहा गया इसलिए उनका इस्तेमाल बिल्कुल स्वीकार्य है। परन्तु खामोशी का मतलब अधिकार देना नहीं है। इब्रानियों की पुस्तक में हम इसके दो उदाहरण देखते हैं। इब्रानियों 1:4-5 में लेखक स्वर्गदूतों पर मसीह के श्रेष्ठ होने की साबित करना चाहता है। ऐसा करने के लिए वह पूछता है कि किस स्वर्गदूत से परमेश्वर ने कहा, "तू मेरा पुत्र है।" बेशक इसका अर्थ है कि किसी स्वर्गदूत से नहीं। इसलिए मसीह स्वर्गदूतों से बढ़कर है, इब्रानियों 7:13-14 में लेखक एक नई याजकाई की आवश्यकता को पक्का करना चाह रहा है। यीशु के लिए याजक होने के लिए एक नई व्यवस्था का आरंभ होना आवश्यक था। क्योंकि पुरानी व्यवस्था यहूदा के गोत्र में से किसी याजक के आने के बारे में कुछ नहीं बताती। इसके बजाय व्यवस्था में यह स्पष्ट किया गया था कि हर याजक लेवी के गोत्र में से ही हो। लेवी के बारे में साफ बताया गया है। इसलिए अन्य सभी गोत्रों की बात खुद-ब-खुद खारिज हो जाती है। इस प्रकार मूसा की व्यवस्था के अनुसार मसीह याजक नहीं बन सकता था क्योंकि वह लेवी के गोत्र में से नहीं था। इसी प्रकार केवल गाने की ही स्पष्ट अनुमति दी गई है इसलिए साज बजाना अन्य हर किस्म खारिज हो जाता है। अन्य शब्दों में साजों के इस्तेमाल की हमें कोई अनुमति नहीं है।

मसीहियत के पूरे इतिहास में अपनी आराधना में साजों के मिलाए जाने का विरोध करते रहे हैं। आराधना में पहली बार ऑरगन यानी साज सातवीं सदी के अंत

में लाया गया था ऐसा माना जाता है। यहूदी लोग मन्दिर में की जाने वाली अपनी आराधना में साजों का इस्तेमाल करते थे और यूनानी लोग मूर्तियों की पूजा करने में उनका इस्तेमाल करते थे। इसलिए बहुत संभावना है कि आरंभिक मसीही साजों से परिचित होंगे और इनके इस्तेमाल में उन्हें कोई दिक्कत नहीं होती होगी परन्तु फिर भी व्यावहारिक रूप में हर कोई यह मानता है कि आरंभिक कलीसिया अपनी धार्मिक आराधना में साजों का इस्तेमाल नहीं करती थी।

इसके अलावा आधुनिक डिनोमिनेशनों के अधिकतर संस्थापकों ने भी साजों के इस्तेमाल का विरोध किया है। इनमें कुछ उद्धाहरणों को देखें,

मार्टिन लूथर, "परमेश्वर की आराधना में ऑगन का प्रतीक है।"

जॉन कैल्विन, "यह धूप जलाने, मोमबत्तियां जलाने या व्यवस्था की अन्य परछाइयों को बहाल करने से बढ़कर उपयुक्त नहीं है। रोमन कैथोलिक लोगों ने इसे यहूदियों से लिया है।"

जॉन वैस्ली, "मुझे हमारे चैपलों में ऑरगन के इस्तेमाल से कोई आपत्ति नहीं है। शर्त यह है कि यह न तो दिखाई दे और न सुनाई दे।"

जॉन नॉक्स, "ऑरगन को "सीटियों का डिब्बा" कहते थे।

हमारा उद्देश्य तो नए नियम की कलीसिया को बहाल करने का है जो आराधना में गाने में साजों का इस्तेमाल नहीं करती और इसका विरोध करती है। इसलिए यदि कोई केवल नये नियम का मसीही बनाना चाह रहा है तो वह बिना साजों के ही आराधना करेगा।

पवित्र आत्मा की अगुआई (यूहन्ना 16)

ऍडी क्लोर

"मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सम नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा" (आयतें 12, 13)

यीशु ने अपने जाने के बाद प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा की थी। उसने इस प्रतिज्ञा को इस प्रकार से बताया था जिससे प्रेरितों को सबसे बड़ी तसल्ली मिली, "तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा" (16:7)। उसने उन्हें यह भी बताया था कि आत्मा संसार को उसके परमेश्वर होने, उसकी सेवकाई, उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के विषय में निरुत्तर करेगा (16:8-11)। आत्मा ने संसार को यीशु के संदेश को ठुकराने और उसे अर्थात परमेश्वर के धर्मी जन को दोषी ठहराने की उसकी बुराई का पाप दिखाना था। उसने न्याय की उस बात को जो उस

सच्चाई को उसने दी थी को उनके इंकार करने के कारण आने वाले न्याय को और स्पष्ट करना था।

इस बातचीत को जारी रखने के रूप में यीशु ने अपने प्रेरितों को यह भी वचन दिया कि पवित्र आत्मा उनकी अगुआई करेगा और उन्हें अपने काम के योग्य दूत बनने के योग्य बनाएगा। वह उन पर सब कुछ प्रगट नहीं कर पाया पर उसने उनके कदम अपनी सच्चाई के मार्ग पर टिका दिए। आत्मा ने आकर उन्हें आवश्यक हर अतिरिक्त सच्चाई को प्रगट करना था। यीशु की मृत्यु, उसके पुनररुत्थान और पिन्तेकुस्त के दिन के बाद प्रेरितों ने उस प्रकाशन को जो प्रभु उन्हें देना चाहता था पूरी तरह से समझने की स्थिति में होना था।

विशेषकर, आत्मा ने उनके लिए क्या करना था?

सब सत्य का

आत्मा ने उन्हें "सब सत्य का" मार्ग बताना था। यीशु ने कहा, "परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्म आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।" यूनानी भाशा में इस बात पर जोर देते हुए कि यीशु और आत्मा "वह" सच्चाई प्रगट कर रहे हैं, यहां पर (द) उपपद शामिल किया।

पवित्र आत्मा द्वारा दी जाने वाली सच्चाई दोतरफा अर्थात आगे और पीछे दोनों की ओर देखने की होनी थी। आत्मा ने प्रेरितों को वे सब बातें याद दिलानी थी जो यीशु ने उन्हें बताई थी। वे अपने दिमाग से किसी भी बात को जो यीशु ने उन्हें बताई थी निकलने नहीं दे सकते। आत्मा ने उन्हें वह सब बताना था जो उन्हें जानना आवश्यक था जिसे वे यीशु से सीखने को तैयार नहीं थे। उसने उन्हें बताया, "परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह तुम्हें स्मरण कराएगा" (14:26)।

प्रेरितों के लिए इन बातों का कितना महत्व रहा होगा इनमें उस अधिकार का संकेत था जो प्रेरितों को दिया जाने वाला था। आत्मा के द्वारा संदेश देकर उन्होंने दूत बनना था। इसके अलावा इन शब्दों में उस संदेश की पूर्णता पर जोर दिया गया जिसे प्रेरितों ने प्रचार करना और सिखाना था। "सब सत्य का अर्थात पूरी सच्चाई का रास्ता बताया जाना था।" पहली सदी और आने वाली सब सदियों की कलीसिया को जितनी भी सच्चाई की आवश्यकता थी वह उन पर प्रगट होनी थी। यहूदा ने अपने सुनने वालों से "उस विश्वास के लिए पूरा प्रयत्न" करने का आग्रह किया "जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया" (यहूदा 3)।

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार

पवित्र आत्मा ने कोई नई शिक्षा नहीं देनी थी बल्कि परमेश्वर की इच्छा से मेल खाती बातें ही बतानी थीं। यीशु ने कहा, "क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही करेगा" आत्मा ने अपनी बढ़ाई करने अर्थात "अपनी ओर से" या अपनी स्वयं की योजना देने नहीं आना था। बल्कि उसका उद्देश्य वही बताना था जो पिता ने उसे बताने को दिया था। यीशु की तरह ही आत्मा ने भी

अपनी ओर से कोई बात नहीं बतानी थी। अपनी सेवकाई के आरंभ में यीशु ने कहा था, "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता हूं। जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं" (5:30)। आत्मा की भूमिका यीशु के मिशन को ही लेकर उसे बढ़ाना था जिससे पिता की इच्छा पूरी हुई थी।

आत्मा ने अपनी कोई नई शिक्षा नहीं देनी थी। बल्कि इसने उसी सच्चाई को व्यापक और पूर्ण अर्थ में समझाना था जो इतनी अधिक जानकारी को प्रेरितों के ग्रहण न कर पाने के कारण यीशु नहीं दे पाया था। वे उस समय जब यीशु उन से बातें कर रहा था पूर्ण सच्चाई के बौद्ध को सह नहीं सके। वह सच्चाई जो यीशु ने और आत्मा ने संसार को दी दोनों एक ही हैं; परन्तु उसका पूर्ण प्रकाशन करते हुए आत्मा ने यीशु के आगे बताया। उसे कलीसिया के साथ रहने और संसार में सच्चाई को बनाए रखने के लिए भेजा था।

परमेश्वर की सनातन मंशा को पूरा करते हुए

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों पर प्रगट करना था कि भविष्य में क्या होने वाला है। यीशु ने कहा, "और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।" परमेश्वर की सनातन मंशा को पूर्ण रूप में रखा जाता है। पुरखाओं और मूसा के युग के लम्बे वर्षों से परमेश्वर अपनी इस बड़ी योजना को लाने पर काम कर रहा था। अब समय के पूरा होने पर (देखें गलातियों 4:4), मसीहा ने हर पाप के लिए, सदा के लिए और सब लोगों के लिए श्रेष्ठ बलिदान देना था। अंतिम बलिदान ने वास्तविकता परमेश्वर के लिए अन्त में यह कहना संभव बनाना था, "मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा" (यिर्मयाह 31:34)। पुराने नियम के समयों के हर बलिदानों को यीशु के बलिदान में अपनी पूर्णता मिलनी थी। पवित्र आत्मा उसे स्पष्ट करने के लिए जो पुत्र ने किया था, वह प्रगट करने के लिए जो संसार के लिए परमेश्वर की चल रही योजना के अनुसार होना आवश्यक है और पूरे मसीही युग के लिए यीशु के प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए आना था।

मसीही सन्तुलन

कैनथ टिप्टन

आत्मा	सच्चाई	भावना	समझ
विश्वास	कर्म	डॉक्ट्रिन	व्यवहार
प्रेम	भय	विश्वास	बपतिस्मा

क्या आपके मसीही जीवन में सन्तुलन है? सन्तुलन शब्द का इस्तेमाल यह देखने के लिए कि हर भुजा दूसरी भुजा के बराबर है, आर्ट और गणित में अलग-अलग भुजाओं के मेल खाने के लिए किया जाता है। आइए संक्षेप में आराधना सेवा और उद्धार के तीनों तत्वों की संक्षेप में समीक्षा करते हैं। ऐसा करते हुए हम देखेंगे कि

हमें इन क्षेत्रों में सन्तुलन को कैसे लागू करना चाहिए।

सबसे पहले, क्या आप आराधना आत्मा और सच्चाई से करते हैं? कुएं पर सामरी स्त्री को यीशु ने बताया था कि पिता ऐसे लोगों को ढूंढ़ता है जो उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करते हैं (यूहन्ना 4:23, 24)। सही डॉक्ट्रिन के बिना अच्छा व्यवहार होना ही काफी नहीं है। एक और जगह पर पौलुस आत्मा से और समझ से ही गाने को कहता है (1 कुरिन्थियों 14:15)। क्या यह हो सकता है कि यदि हम बजाने वाले साजों और सुरों पर अत्याधिक जोर देते हैं तो वह परमेश्वर को पसंद न हो? सही संतुलन के लिए बाइबल के समझ में आने वाले गीतों का होना आवश्यक है जो, भजनों, स्तुतिगानों और आत्मिक गीतों में एक दूसरे के सुधार के लिए गीत के समानांतर हो (कुलुस्सियों 3:16)। इसके अलावा, क्या आपकी आराधना में भावना और समझ का संतुलन भी है? क्या आप केवल अपनी भावनाओं से ही प्रभावित होते हैं या परमेश्वर के वचन की गहराईयों पर विचार करते हुए आप अपने मन को भी उतना ही उकसाने की इच्छा रखते हैं?

बाइबल के सन्तुलन की दूसरी बात विश्वास और कर्म (सेवा) है। याकूब ने कहा कि बिना कर्मों के विश्वास मरा हुआ है (याकूब 2:17)। अगली आयत में हमें बिना कर्मों के अपना विश्वास दिखाने की चुनौती देते हुए उसने इस अवधारणा को और भी स्पष्ट कर दिया और बताया कि वह अपने विश्वास को अपने कर्मों के द्वारा दिखाए। यदि कोई केवल विश्वास की भी अति कर रहा हो या केवल कर्मों की ही अति कर रहा हो तो उसका संतुलन बिगड़ा हुआ होगा। मती 7:21-23 में यीशु ने यही बताया। वह केवल कर्मों पर घमण्ड करने वाले कुछ लोगों के लिए कहता है कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना।

क्या आपकी शिक्षा (डॉक्ट्रिन) तथा व्यवहार के बीच सही संतुलन है? क्या आप संडे के दिन अलग और सप्ताह के शेष दिनों में अलग प्रकार के व्यक्ति होते हैं? पौलुस यह कहते हुए कि यदि तुम्हारे अंदर यह पाप है तो तुम वह नहीं कर रहे जो तुम करना चाहते हो जो तुम नहीं करना चाहते, मनुष्य के पापी होने की बात की (रोमियों 7:15-19)। शायद मसीही जीवन जीने में संतुलन बनाने की आपकी प्रेरणा प्रेम और भय दोनों के नाम से आती है। आज्ञाओं में दोनों भावनाएं जुड़ी हुई है। इसके एक क्षेत्र को सभोपदेशक 12:13 में देखा जा सकता है जहां बाइबल कहती है, परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। यीशु ने इसका दूसरा भावनात्मक पक्ष तब दिया जब उसने कहा, यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना 14:15)। क्या आपको यह जानकारी है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और उसके साथ ही उस अद्‌भुत समझ के साथ कि वह बुराई को दण्ड देगा, आप संतुलन भी बनाते हैं?

तीसरा बड़ा तत्व जिसमें सही संतुलन होना आवश्यक है वह आपके अपने पापों के क्षमा किए जाने और खोए होने की स्थिति से उद्धार पाए होने की स्थिति में जाना है। मरकुस 16:16 में यीशु इस विचार को समझता है। वह हमें बताता है

कि जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। यदि हमारे पास ये दोनों बातें नहीं हैं तो हमारा संतुलन ठीक नहीं । हम असंतुलित हो सकते हैं यदि हम केवल विश्वास करें और इस बात को न समझें कि बपतिस्मा दफनाएं जाना है जो हमें नया जीवन दिलाता है (रोमियों 6:4)। यदि हम विश्वास को निकालकर बपतिस्मे पर जोर दें तब भी हम संतुलन में नहीं होंगे। इन सभी मामलों में यदि हम पूर्ण मसीही सन्तुलन पाना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि हम एक पक्ष पर भी उतना ही जोर दें जितना दूसरे पक्ष पर देते हैं। मसीही जीवन में मज़बूत होना आवश्यक है। यदि आप समानांतर रेखा को काटती हुई लम्बी रेखा को दिखाएं तो इससे क्रूस बन जाता है। मेरा मानना है कि मसीही सन्तुलन पाने में हमारी सहायता का एक तरीका क्रूस पर विचार करना है, या और भी स्पष्ट कहें कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु पर विचार करना आवश्यक है। हमारे लिए उसकी मृत्यु का पता होना हमें संतुलित रूप से मसीही जीवन जीने की इच्छा के कारण में सहायक होना चाहिए।

यीशु के साथ आप क्या करेंगे?

जॉन स्टेसी

मत्ती 27:22 में पीलातुस ने एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा था। उसने कहा था "फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है क्या करूं?" उसके जीवन में एक ऐसा अवसर आया था जबकि उसे यीशु के बारे में कुछ निश्चय करना था। यह एक ऐसा प्रश्न है जिससे कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति इसका जवाब दिये बिना नहीं बच सकता। यदि आप यीशु के बारे में गलत निश्चय करेंगे तो इस जीवन में और आने वाले अनन्त जीवन में आप उन सब वस्तुओं की हानि उठाएंगे जो अमूल्य हैं। पर यदि आप यीशु के बारे में एक सही निश्चय करेंगे, तो आप उन अनेक आशीषों के, इस जीवन में और आने वाले जीवन में, वारिस बनेंगे जो मनुष्य की समझ से परे हैं।

हम शायद इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहें, कि मनुष्य को यीशु के विषय में निश्चय करने की आवश्यकता क्यों है? इस जीवन में जैसा निश्चय आप यीशु के साथ करेंगे, उसी के आधार पर परमेश्वर आप को स्वीकार और अस्वीकार करेगा। यूहन्ना 3:16 में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" जो लोग मसीह को अस्वीकार करेंगे उन्हें परमेश्वर पिता भी अस्वीकार करेगा। एक और बात जो यीशु के विषय में निश्चय करने पर निर्भर करती है यह है, जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 14:6 में कहा था, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" मसीह जीवन और सच्चाई का वह मार्ग है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के

पास जा सकते हैं। सो परमेश्वर हमें स्वीकार या अस्वीकार करेगा, और क्या हम उसके राज्य में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाएंगे, यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि इस जीवन में हम यीशु के साथ क्या करते हैं।

कुछ बातें ऐसी हैं जो प्रत्येक व्यक्ति यीशु के साथ अवश्य करेगा चाहे वह उनके बारे में जानता है या नहीं और चाहे वह उसे माने या न माने। प्रत्येक व्यक्ति या तो मसीह को मानेगा या फिर उसे अस्वीकार करेगा। यीशु ने यूहन्ना 12:48 में कहा था कि, "जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है, अर्थात जो जीवन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" फिर या तो हम उसे अपने दिल में आने देंगे या हम उसे बाहर रखेंगे। प्रकाशितवाक्य 3:20 में यीशु ने कहा था "देख में द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो में उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।" हमें या तो उसे स्वीकार करना है या फिर हम उसका इंकार करेंगे। क्योंकि मत्ती 10:32-33 में उसने कहा था, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो मनुष्यों के सामने मेरा इंकार करेगा, उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इंकार करूंगा।"

यदि हम यह देखें कि बाइबल में कुछ लोगों ने यीशु के साथ क्या किया था, तो इससे हमें यीशु के बारे में सही निश्चय करने में सहायता मिलेगी। यहूदा ने यीशु को पकड़वाया था। आज बहुतेरे लोग यहूदा की ही तरह यीशु को, शैतान के बहकावे में आकर, बेच रहे हैं। मरकुस 14 अध्याय में हम पतरस के बारे में पढ़ते हैं कि उसने तीन बार यीशु का खुलेआम इंकार किया था। ऐसे ही, आज कुछ लोग मसीही सिद्धान्तों पर समझौता करके और मसीह की आज्ञाओं की अवहेलना करके उसका इंकार कर रहे हैं। पीलातुस, मत्ती 26 अध्याय में हम पढ़ते हैं, यीशु के बारे में कोई निश्चय नहीं करना चाहता थ। पर हकीकत यह है कि हर एक व्यक्ति को उसके बारे में कोई न कोई निश्चय अवश्य ही करना पड़ेगा। अनिश्चित रहना उसका इंकार करना जैसा है। पीलातुस ने अपनी पूरी कोशिश की थी कि वह यीशु के बारे में कोई निश्चय करे, और अपने निश्चय को दूसरों के ऊपर छोड़कर वह जानना चाहता था कि, "यीशु को जो मसीह कहलाता है, मैं क्या करूं?" क्या आप यहूदा की तरह है या पतरस की तरह, या फिर पीलातुस की तरह? किन्तु आप पौलुस की तरह बन सकते हैं। (प्रेरितों 22:1-16)

पौलुस कुरिन्थियों के नाम अपनी दूसरी पत्री में लिखकर कहता है कि एक दिन हम सबको मसीह के न्यायासन के सामने खड़ा होना पड़ेगा। क्या आपने यीशु के बारे में उचित निश्चय करके अपने आपको उसके सामने खड़े होने के लिए तैयार कर लिया है? (2 कुरि. 5:10)